MR. SPEAKER : The House may stand in silence for a short while to express its sorrow.

The Members then stood in silence for a short while.

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

विदेशों में भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र

*1621. **श्री शंकर दयाल सिंह:** क्या विदेश मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) उन देशों के नाम क्या हैं जहां भारतीय संस्कृतिक केन्द्र स्थापित किये गये हैं ; और

(ख) क्या उनमें काम कर रहे अधिकारियों के लिए भारतीय संस्कृति का विशेष ज्ञान आवश्यक है ?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI SURENDRA PAL SINGH) : (a) and (b). No Indian Cultural Centres have so far been established abroad under Government auspices. Most of our missions abroad, however, maintain libraries and reading-rooms and arrange film shows and our Public Relation Officers and Information Officers pay particular attention to cultural affairs, for which they are reasonably well equipped.

श्री शंकर दयाल सिंह : मैं जानना चाहता हूं कि कौन से और कितने ऐसे देश हैं जहां पर हमारे कल्चरल अटैषी हैं और क्या उनको भारतीय साहित्य और भारतीय संस्कृति का पर्याप्त ज्ञान है ?

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : सब जगहों के नाम तो मेरे पास नहीं हैं लेकिन कल्चरल अटैषी बहुत सी जगहों पर हमारी एम्बैसीज में हैं, लंदन में हैं, मास्को में हैं, न्यूयार्क में हैं, वाशिंगटन में हैं। और भी बहुत सी जगह हैं। जैसा मैंने सवाल के जवाब में कहा है हमारे जितने भी कर्मचारी वहां काम कर रहे हैं इस विभाग में वे काफी कुछ कल्चरल अफेयर्ज के बारे में जानते हैं और उनको इसका ज्ञान भी है। वे बहुत अच्छा काम कर रहे हैं।

श्री शंकर दयाल सिंह : हिन्दी के बहुत बड़े पत्रकार और लेखक श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सायन जो दिनमान के सम्पादक हैं उन्होंने अपने पिछले एक लेख में लिखा है कि जब वह विदेशों में अपने भारती दूतावास में गए तो उनका परिचय इस रूप में कराया गया : Here is the writer of the famous Kamasutra. इससे यह पता चलता है कि विदेशों में जो हमारे दूतावास हैं और जो कर्मचारी इस काम को करते हैं और जो उच्च पदों पर हैं या छोटे पदों पर हैं उनको भारतीय संस्कृति का पर्याप्त ज्ञान नहीं है। मैं जानना चाहता हूं कि क्या यह बात सही है कि विदेशों में जो लोग हैं वे भारत की जो आत्मा है, जो भारतीय संस्कृति और साहित्य है उसका पर्याप्त ज्ञान नहीं रखते हैं और जो कुछ रखते भी हैं उनको बाहर जा कर भूल जाते हैं और इसी में अपनी शान समझते हैं ? अतः क्या ऐसे लोगों को बाहर भेजने के पहले सरकार उनको संस्कृतिक ज्ञान कुछ परिचय देती हैं या नही देती है ?

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : जो भी हमारे कर्मचारी या अफसर जाते हैं इस काम को

करने के लिए उनको यहां संस्कृति के बारे में, कल्चर के बारे में, हिस्ट्री के बारे में सब कुछ बताया जाता है। हो सकता है कि सब के सब को एक सा ज्ञान न हो, योग्यता में कोई कम हो कोई ज्यादा हो। कोशिश यह की जाती है कि जो भी वहां हमारे बिहाफ पर इस काम को करें वे सब इस काम में योग्य हों।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : प्रश्न 'ख' का स्पष्ट उत्तर नहीं आया है। यह ठीक है कि कल्चरल सैंटर हम नहीं चला रहे हैं। लेकिन हमारे राज दूतावासों में कल्चरल अटैषी हैं। प्रश्न यह है कि क्या कल्चरल अटैषी पद के लिए लोगों का चयन करते समय कोई परीक्षा इस बात की भी ली जाती है कि जो जिम्मेदारी उन पर सोंपी जा रही है, उस जिम्मेदारी का वे विदेशों में जा कर निर्वाह कर सकते हैं या नहीं कर सकते हैं? जो कल्चर और सिविलाइजेशन में फर्क नहीं कर सकते हैं अगर उन्हें कल्चरल अटैषी बना कर भेजा जाएगा तो विदेशों में हमारी संस्कृति का वे क्या नाम रोशन करेंगे?

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : मैं यह मालूम करने की कोशिश कर रहा हूं कि आखिर मैम्बरों के दिमाग में यह बात कैसे आई कि हमारे आदमी वहां योग्य नहीं हैं। कोशिश यही की जाती है कि जो भी कोई इस काम को वहां करें उनको पूरी वाकफियत हो, मालूमात हो, यहां की संस्कृति का उनको पर्याप्त ज्ञान हो। किसी का नाम लेकर अगर बताया जाए तो उसका जवाब भी दिया जा सकता है। कोशिश तो यही की जाती है कि अच्छे से अच्छे और योग्य आदमी भेजे जायें इस काम को करने के लिए और वे काम अच्छा कर भी रहे हैं। हो सकता है कि कोई अच्छे हों और कोई कम अच्छे हों। लेकिन यह कहना कि सभी अयोग्य हैं, गलत है।

SHRI HARI KISHORE SINGH : Sir, in view of the poor performances in regard to cultural affairs of our country abroad, does the Government think of establishing branches of the Indian Council of Cultural Relations in other Countries, especially in South-East Asian countries and in all other countries with which we have cultural affinity.

SHRI SURENDRA PAL SINGH : In addition to the work which is being carried on by our Information Officers and Cultural Attaches, it is also a fact that the Indian Council of Cultural Relations is also doing similar work and they have a number of schemes in hand. For instance, they have got centres of Indian studies and they have also got Chairs of Indian Culture in foreign universities. They have proposed a scheme for opening two new cultural centres at Sua in Fiji and George Town in Guiana.

श्री राम सहाय पांडे : भारतीय संस्कृति पाँच ललित कलाओं से मंडित है। मैं जानना चाहता हूँ कि दूतावासों के साथ काम करने वाले जो कल्चरल मंडल हैं, जो हमारे देश की संस्कृति को वहां प्रस्थापित करते हैं, उनकी पात्रता और योग्यता का मापदंड क्या रखा जाता है? कोई परीक्षा ले कर क्या आप उनको वहां भेजते हैं?

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह : कल्चरल रिलेशंज् को प्रोमोट करने का ज्यादा तर काम आई सी सी आर करता है और असल में यह जो सबजैक्ट है यह एजुकेशन मिनिस्टरी का है। उनके बहुत से कल्चरल एग्रीमेंट्स हैं।

बहुत से ट्रुप. रिंगर, म्यूजिशियन, डांसर वे बाहर भेजते हैं और बाहर के इस तरह के लोग यहां आते हैं और यह काम चलता रहता हैं आई सी सी आर और एजुकेशन मिनिस्ट्री के द्वारा । इसके अलावा कुछ काम हमारी एम्बैसीस भी करती हैं । असल में प्लाँज और स्कीम्ज़ एजुकेशन मिनिस्ट्री बनाती हैं और इनका इम्प्लेमेंटेशन हमारे द्वारा होता हैं । एजुकेशन मिनिस्ट्री के साथ कोओर्डिनेट करके यह सब काम अच्छी तरह से हो यह कोशिश की जाती हैं और मेरे ख्याल से काम अच्छा चल रहा है । अगर माननीय सदस्य के पास कोई मिसाल हो कि काम गलत चल रहा हैं तो हमें बतायें, उसको अच्छा करने की कोशिश की जाएगी ।

SHRI H. N. MUKERJEE : Sir, may I know if the Minister is aware of a general impression among the people who go abroad or who stay abroad for a certain amount of time that these officers usually are functioning as information officers who distribute documents like speeches of the Prime Minister and do not function as cultural officers either for liaison with cultural representatives in the countries of their accredition or as spokesmen of Indian culture organising things which will project the idea of Indian culture abroad?

SHRI SURENDRA PAL SINGH : This is the viewpoint of the hon'ble Member with which I am not prepared to agree.

DR. MELKOTE : Is it a fact that a number of people from India go outside-most of them students-- and the foreigners would like to understand from them the cultural aspect of India? Often times, they may be Hindus, they may be Christians, they may be Muslims and these people are asked to speak about Indian culture and they give a mutilated picture of Indian culture. May I know what is being done by the Cultural Branch to rectify these things?

SHRI SURENDRA PAL SINGH : This is a very important point which the hon. Member has raised. It is a fact that a large number of students go abroad to various countries and it is also important that they should go from here with a proper orientation and proper knowledge of our culture so that they can project a better image of India. For this purpose, the Indian Council of Cultural Relations has proposed a new scheme which they have called the orientation of Indian scholars. Under this scheme it is proposed that before a student goes abroad he will be put through an orientation course and he will be told everything about Indian culture; so that he has a proper background of our culture, so that when he goes abroad he will be able to project a better image of our country.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA : When selections are made for the Indian Foreign Service, are there any criteria laid down for selection, particularly to the posts of cultural attaches, as there must be for the posts of commercial attaches?

SHRI SURENDRA PAL SINGH : Cultural attaches are officers of the Ministry of Education. The selection is done by the Ministry of Education and then they are attached to our missions abroad. They carry on this work on behalf of the Ministry of Education but they are under our administrative control so long as they are a part of our Missions.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA : A very anomalous situation.